

रॉबर्ट वन्नॉय, प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 19

यशायाह 54

एफ. पीड़ित सेवक के कार्य के परिणाम (ईसा. 54:1-56:8)

आइए यशायाह पर वापस जाएँ। हम अंतिम कक्षा घंटे यशायाह 53 पर चर्चा कर रहे थे, जो नौकर से संबंधित अनुच्छेदों के क्रम में अंतिम अंश था। यशायाह 53 उन सेवक अंशों का चरमोत्कर्ष है। यदि आप अपनी रूपरेखा को देखें तो आप देखेंगे कि यशायाह 40-66 के अंतर्गत एक और उप-बिंदु है। उप-बिंदु डी. "द सर्वेंट ऑफ द लॉर्ड थीम" था और हम इसी पर चर्चा कर रहे हैं। हमने डी का निष्कर्ष निकाला है। इसलिए हम ई की ओर बढ़ते हैं, जो है: "पीड़ित सेवक के कार्य के परिणाम।" और वह यशायाह 54:1-56:8 है। मुझे नहीं लगता कि 54:1-56:8 को वास्तव में पूर्ववर्ती घटनाओं से इसके संबंध के अलावा समझा जा सकता है, और विशेष रूप से यशायाह 53 में नौकर अंशों के उस चरमोत्कर्ष से इसका संबंध है। यशायाह 53 नौकर के अपमान और पीड़ा का वर्णन करता है प्रभु का परिणाम उन लोगों की मुक्ति और औचित्य में होता है जिनके अधर्म उसने सहे थे। यह यशायाह 53 में स्पष्ट हो जाता है।

रूपरेखा: यशायाह 54-56

जब आप 53 से आगे बढ़ते हैं तो आपको नौकर के काम के परिणामों के बारे में अधिक जानकारी मिलती है। मुझे लगता है कि यह खंड तीन उप-खंडों में विभाजित है: 54:1-17, जो एक इकाई के रूप में अध्याय 54 है। अध्याय 54:1-17 परमेश्वर के लोगों को सेवक के कार्य के परिणामस्वरूप भविष्य में विस्तार और आशीर्वाद का आश्वासन देता है। फिर 55:1-56:2. मुझे लगता है कि अध्याय का विभाजन 55:13 और 56:1 के बीच की तुलना में 56:2 पर बेहतर होता है। यशायाह 55:1-56:2 व्यक्तियों को मोक्ष की निःशुल्क पेशकश का लाभ उठाने का निमंत्रण देता है। अंत में 56:3-8 इस बात पर जोर देता है कि सुसमाचार का निमंत्रण किसी जाति या राष्ट्र तक सीमित नहीं है बल्कि सभी के लिए खुला है।

यशायाह 54-56 पर सामान्य टिप्पणी

अब, इस पहले खंड, यशायाह 54:1-17 को देखने से पहले, मुझे इस पूरे खंड के बारे में एक सामान्य टिप्पणी करने दीजिए। यशायाह यहां परमेश्वर के लोगों को संबोधित कर रहे हैं। उस समय परमेश्वर के लोग इस्राएल राष्ट्र का एक हिस्सा थे। समग्र रूप से राष्ट्र प्रभु से विमुख हो गया था, लेकिन वहाँ एक ईश्वरीय अवशेष था। वह ईश्वर के लोगों को संबोधित कर रहे हैं जो उस समय इज़राइल राष्ट्र का हिस्सा थे, लेकिन मुझे नहीं लगता कि ये अध्याय मुख्य रूप से एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल से संबंधित हैं। यह उससे भी व्यापक है। इसका संबंध परमेश्वर के लोगों, परमेश्वर के सच्चे लोगों से है। यह राष्ट्रीय पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना है। वे लोग, परमेश्वर के सच्चे लोग, "सेवक", बहुवचन, "प्रभु के सेवक" के रूप में नामित हैं।

अब तक हम नौकर विषय का पता लगा रहे हैं जहां "नौकर" का उपयोग एक विशिष्ट व्यक्ति के लिए किया गया है जो इज़राइल से आता है और इज़राइल का प्रतिनिधित्व करता है। वह, अपने अपमान और पीड़ा के माध्यम से, उन लोगों के पापों का प्रायश्चित प्रदान करता है जो उस पर भरोसा करते हैं। लेकिन इन अध्यायों में जिन लोगों के बारे में बात की गई है उन्हें "प्रभु के सेवक" कहा जाता है; अर्थात् ईश्वर के सच्चे सेवक के अनुयायी। ये वे लोग हैं जो उसके द्वारा किए गए कार्यों का लाभ उठाते हैं, और ये वे लोग हैं जो उसकी इच्छा पूरी करने के लिए स्वयं को समर्पित कर देते हैं। इसलिए मुझे लगता है, सामान्य तौर पर, यह सामग्री भगवान के सच्चे लोगों, भगवान के सेवकों को संबोधित है।

यशायाह 54:1-17 उनका धर्म यहोवा की ओर से है

आइए पहले खंड, यशायाह 54 को देखें। जब हम यशायाह 54:1-17 को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि अंतिम श्लोक का अंतिम भाग शुरुआत में ही देखने में मददगार है क्योंकि यह इससे पहले की सभी चीजों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। अध्याय. यह एक अलग छंद भी हो सकता है। यशायाह 54:17बी का अंतिम खंड है, "यह प्रभु के सेवकों की विरासत है, और उनकी धार्मिकता मेरी ओर से है, प्रभु कहते हैं।" अध्याय में जो वादे हैं वे

प्रभु के सेवकों के हैं; अर्थात्, उन लोगों के लिए जो प्रभु के सेवक का अनुसरण करते हैं। इन लोगों की अपनी कोई धार्मिकता नहीं है। यह कहता है, "यह प्रभु के सेवकों की विरासत है, और उनकी धार्मिकता मेरी ओर से है।" उनकी अपनी कोई धार्मिकता नहीं है। वे यशायाह 53 में बताए गए लोगों के समान हैं जो भटक गए थे। वे अपने अपने मार्ग पर चले गए, परन्तु प्रभु ने उनका अधर्म दास पर डाल दिया है, और इस प्रकार सेवक के कार्य के द्वारा वे परमेश्वर की कृपा से धर्मी और पवित्र हो गए हैं। तो, "उनकी धार्मिकता मेरी ओर से है," प्रभु कहते हैं।" यह अध्याय 54 में दी गई सभी बातों का सार है। "यह प्रभु के सेवकों की विरासत है, उनकी धार्मिकता मेरी ओर से है।"

यशायाह 54:1-17 की रूपरेखा

मुझे लगता है कि शेष अध्याय को देखने से पहले वह आखिरी कविता उपयोगी है। जब हम शेष अध्याय पर पहुंचते हैं, तो यह तीन खंडों में विभाजित हो जाता है। श्लोक 1-3: "प्रभु के सेवकों को आनन्दित होना चाहिए क्योंकि उनके पास बड़ी वृद्धि होने वाली है।" श्लोक 4-10: "भविष्य में ईश्वर ने इस्राएल के लिए जो आशीर्वाद रखा है। अब यहाँ एक अपवाद है, मुझे लगता है, उस सामान्य सिद्धांत के लिए जो मैंने कहा था कि, अधिकांश भाग के लिए, ये अध्याय विशेष रूप से इज़राइल राष्ट्र से संबंधित नहीं हैं। लेकिन मुझे लगता है कि श्लोक 4-10 में आपका ध्यान विशेष रूप से इज़राइल राष्ट्र पर है। फिर श्लोक 11-17: "भगवान के लोगों की स्थिरता।"

यशायाह 54:1-3 प्रभु के सेवकों को आनन्दित होना चाहिए क्योंकि उनके पास बड़ी वृद्धि होने वाली है तो आइए उन शीर्षकों के साथ पाठ को देखें। पहला, श्लोक 1-3: "प्रभु के सेवकों को आनन्दित होना चाहिए क्योंकि उनके पास बड़ी वृद्धि होने वाली है।" हम पढ़ते हैं, "हे बांझ, तू जो नहीं सह सकी, गाओ; हे यहोवा, तू जो गर्भवती नहीं हुई, गीत गा, और ऊंचे स्वर से चिल्ला; क्योंकि बेसहारा की सन्तान ब्याही के सन्तान से अधिक होती है, यहोवा की यही वाणी है। अपने तम्बू का स्थान बढ़ाओ, और तुम्हारे निवासोंके पर्दे बढ़ाओ; क्योंकि

तू दाहिनी ओर और बाईं ओर से आगे बढ़ेगा; और तेरा वंश अन्यजातियों का अधिकारी होगा, और उजड़े हुए नगरों को बसाएगा।"

श्लोक एक में एक प्रारंभिक प्रश्न उठाया गया है: "हे बांझ, तू जो नहीं सह सकी, गाओ।" और अंतिम वाक्यांश, "विवाहित पत्नी के बच्चों की तुलना में निराश्रित के बच्चे अधिक होते हैं।" बांझ औरत कौन है? विवाहित पत्नी कौन है? कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि निर्वासन में बंजर महिला इज़राइल या यरूशलेम है - वह बंजर महिला है, और विवाहित पत्नी निर्वासन से पहले इज़राइल है - डेविड के समय में इज़राइल जब भगवान ने वास्तव में अपने लोगों से शादी की थी और उन्हें आशीर्वाद दिया. उस स्थिति में, जो लोग अप्रभावी होने के लिए अभिशप्त लग रहे थे, जो बंजर थे, जो असफल लग रहे थे, उन्हें आश्वासन दिया गया है कि अंततः भगवान उन्हें महान कार्य पूरा करने के लिए उपयोग करेंगे। अतीत के अच्छे दिनों में जितना संभव था उससे भी बड़ा कार्य।

हालाँकि, मुझे लगता है कि "बांझ" को गैर-यहूदी राष्ट्रों के रूप में और विवाहित महिला को इज़राइल के रूप में लेना बेहतर है। गलातियों 4:26 और 27 में आपको पॉल के इस अंश का संदर्भ मिलता है जब वह कहता है, "परन्तु यरूशलेम, जो ऊपर है, स्वतंत्र है, जो हम सब की माता है। क्योंकि लिखा है, हे बांझ, जो जनन नहीं करती, आनन्द करो; हे तू जो कष्ट नहीं उठाता, टूटकर चिल्लाओ; क्योंकि सूनी के उसके पति से अधिक बच्चे होते हैं।" यशायाह 54:1 को ऊपर के यरूशलेम के संदर्भ में उद्धृत किया गया है। पॉल चर्च से जो कह रहा है, उसके संदर्भ में, भगवान के सच्चे लोगों में अन्यजाति शामिल हैं। वादे से जन्मे लोगों की तुलना उस यरूशलेम से की जाती है जो अब है, यानी वे लोग जो अपने कार्यों में कानूनी पालन के माध्यम से मोक्ष की तलाश कर रहे हैं, इत्यादि। इसलिए वहां के बंजर और उजाड़ को गैर-यहूदी राष्ट्रों के प्रतिनिधि के रूप में समझना बेहतर लगता है, और विवाहित पत्नी इज़राइल है। जो कहा गया है वह यह है, "हे बांझ, तू जो प्रसव पीड़ा में नहीं पड़ी, गाओ; क्योंकि निराश्रित की सन्तान ब्याही पत्नी की सन्तान से अधिक होती है।" यह सेवक के कार्य के परिणामों को संदर्भित करता है क्योंकि सुसमाचार अन्यजातियों में फैलता है। इस्राएल की तुलना में अन्यजातियों में से अधिक लोग मसीह के पास आएंगे।

श्लोक 2 और 3 में आपको ईश्वर के लोगों का विस्तार मिलता है क्योंकि दूर के देश और उजाड़ शहर ईश्वर के सच्चे लोगों के केंद्र बन जाते हैं। “अपने तम्बू का स्थान बढ़ाओ, वे तुम्हारे निवासों के परदे फैलाएं; तू दाहिनी ओर और बाईं ओर से टूटना; तेरा वंश अन्यजातियों का अधिकारी होगा, और उजड़े हुए नगरों को बसाएगा।”

जब विलियम कैरी ने भारत के लोगों को सुसमाचार भेजने का आह्वान किया तो उन्होंने पद 2 को अपने पाठ के रूप में इस्तेमाल किया। “अपने तम्बू का स्थान बढ़ाओ, अपने निवासों के परदे फैलाओ ,” इत्यादि। संदर्भ के आलोक में, उनका ऐसा करना उचित था; वह केवल एक कविता को संदर्भ से बाहर नहीं उठा रहा था, बाकी अध्याय से असंबंधित। लेकिन वह उसी चीज़ का आग्रह कर रहे थे जिसके बारे में यह आयत कहती है - कि सुसमाचार का संदेश विदेशों में फैलाया जाए। तो श्लोक 1-3 में प्रभु के सेवकों को आनन्दित होना है क्योंकि उनके पास बड़ी वृद्धि होने वाली है।

यशायाह 54:4-10 भविष्य में इस्राएल के लिए परमेश्वर ने जो आशीर्वाद रखा है श्लोक 4-10 वह है "भविष्य में परमेश्वर ने इस्राएल के लिए जो आशीर्वाद रखा है।" मुझे लगता है कि पद 4 की शुरुआत में यशायाह विवाहित महिला, अर्थात् इज़राइल को संबोधित करता है, जिसे कुछ समय के लिए अस्वीकार कर दिया गया था क्योंकि वे प्रभु से दूर हो गए थे, लेकिन अंततः बहाल हो गए। इस प्रकार उस समय की निन्दा जब वे परित्यक्त और विधवा प्रतीत होती थीं, उनके आने वाले समय की महिमा में भुला दिया जाएगा। तो आपने पद 4 में पढ़ा, "डरो मत; क्योंकि तू लज्जित न होगा, और तेरा लज्जित होना न होगा; क्योंकि तू लज्जित न होगी; तू अपनी जवानी की लज्जा को भूल जाएगी, और अपने विधवापन की नामधराई फिर स्मरण न करेगी। क्योंकि तेरा कर्त्ता तेरा पति है; सेनाओं का यहोवा उसका नाम है; तेरा मुक्तिदाता, इस्राएल का पवित्र। वह सारी पृथ्वी का परमेश्वर कहलाएगा। क्योंकि यहोवा ने तुझे एक त्यागी हुई और मन की दुःखी स्त्री, और जवानी की स्त्री के समान बुलाया है, जो तू ने त्याग दी थी, तेरे परमेश्वर का यही वचन है। 'एक छोटे से क्षण के लिए मैंने तुम्हें त्याग दिया है; परन्तु बड़ी दया करके मैं तुझे इकट्ठा करूंगा। थोड़े क्रोध में आकर मैं ने एक

क्षण के लिये तुझ से अपना मुख छिपा लिया; परन्तु मैं तुम पर अनन्त करूणा से दया करूंगा, तेरे छुड़ानेवाले यहोवा का यही वचन है। क्योंकि यह मेरे लिये नूह के जल के समान है; क्योंकि मैं ने शपथ खाई है, कि नूह का जल फिर पृथ्वी पर न फैलेगा; इसलिये मैं ने शपथ खाई है, कि मैं तुझ पर क्रोध न करूंगा, और तुझे डांटूंगा। क्योंकि पहाड़ हट जाएंगे, और पहाड़ियां दूर हो जाएंगी; परन्तु मेरी करूणा तुझ पर से न हटेगी, और न मेरी शान्ति की वाचा कभी टूटेगी, तुझ पर दया करनेवाले यहोवा का यही वचन है।

अब मुझे ऐसा लगता है कि जो दृश्य वहां है वह इसराइल है जिसे एक समय से, कुछ समय के लिए खारिज कर दिया गया है, अंततः बहाल किया जाएगा और उस समय की निंदा, विधवापन की, जब ऐसा होगा तो भुला दिया जाएगा। पद 10, अंतिम पद, अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की दया की स्थिरता का एक मजबूत बयान है: "मेरी दयालुता तुझ पर से न हटेगी, और न मेरी शान्ति की वाचा हटेगी।" यद्यपि ऐसा प्रतीत हो सकता है कि उसने इस्राएल को त्याग दिया है, अंततः वे पुनः स्थापित हो जायेंगे।

मुझे ऐसा लगता है कि मुक्ति के इतिहास में एक आंदोलन चल रहा है, और आप पुरानी वाचा के निर्देशों से नये नियमों की ओर बढ़ रहे हैं। उदाहरण के लिए, आप फसह से प्रभु भोज की ओर बढ़ते हैं, और फिर भी इनमें से कुछ मसीहाई मण्डलियाँ पुरानी वाचा के निर्देशों पर वापस चली जाती हैं। मुझे ऐसा लगता है कि इसमें ईश्वर की मुक्ति की योजना की प्रगति और विभिन्न अवधियों और चरणों की पर्याप्त मान्यता नहीं है जिसमें यह आगे बढ़ती है। मुझे नहीं लगता कि आपको पुरानी बातों पर लौटने की जरूरत है। मुझे लगता है कि उनकी प्रेरणा यहूदी समुदाय से जुड़ने का एक ऐसा साधन ढूँढना है जो आपत्तिजनक न हो और उन्हें सहज महसूस कराए। यह संभवतः एक आउटरीच तकनीक है, लेकिन धार्मिक रूप से मुझे इसमें से कुछ के बारे में आश्चर्य है। मुझे लगता है, जब आप गलातियों को पढ़ते हैं, तो वह मध्य दीवार का विभाजन टूट गया है, और अब वे मसीह में एक हैं - यहूदी और अन्यजाति दोनों। मुझे ऐसा लगता है कि गलाटियन्स एक अलग तस्वीर पेश कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि यहूदी व्यक्ति को यहूदी व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान पूरी तरह से खोनी होगी, लेकिन फिर भी वह मसीह के शरीर में से एक है।

यशायाह 54:11-17 परमेश्वर के लोगों की स्थिरता आइए आगे बढ़ें। अध्याय 54, श्लोक 11-17, है: "भगवान के लोगों की स्थिरता।" श्लोक 11 में हम पढ़ते हैं, "हे तू जो आँधी से घबराई हुई है, और तुझे शान्ति नहीं मिली, देख, मैं तेरे पत्थरों को उजले रंग से और तेरी नेव को नीलमणि से रखूंगा। मैं तेरी खिड़कियाँ सुलेमानी पत्थर की, तेरे फाटक काठ की लकड़ी की, और तेरे सब किनारों को मनोहर पत्थरों की बनाऊंगा।" पद 2 में, हमारे पास परमेश्वर के लोगों का विस्तार एक तम्बू के चित्र के नीचे प्रस्तुत किया गया था: "अपने तम्बू के स्थान को बड़ा करो, रस्सियों को लंबा करो, खूंटों को मजबूत करो," यह परमेश्वर के लोगों का विस्तार है। श्लोक 11 और 12 में आपने परमेश्वर के लोगों की स्थिरता को एक अन्य आकृति द्वारा चित्रित किया है - एक मंदिर का, जो विभिन्न प्रकार के कीमती पत्थरों से ताकत और सुंदरता के साथ बनाया गया है। यह इफिसियों 2:19 और उसके बाद पॉल द्वारा उपयोग किए गए चित्र के समान है, जहां पॉल कहता है, "अब आप अजनबी और प्रवासी नहीं हैं, बल्कि भगवान के घर के संतों के साथ साथी नागरिक हैं, और प्रेरितों की नींव पर बने हैं और भविष्यद्वक्ताओं, यीशु मसीह स्वयं मुख्य आधारशिला है जिसमें सारी इमारत एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती है, जिसमें तुम भी आत्मा के माध्यम से परमेश्वर के वास के लिए एक साथ निर्मित होते हो। इसलिए यहाँ दोहराया गया है कि यशायाह का ईश्वर के लोगों का प्रतीक कीमती पत्थरों से एक साथ निर्मित एक इमारत है। यह परमेश्वर के लोगों की स्थिरता को चित्रित करता है।

पद 13 पर : "और तेरे सब बालक यहोवा की शिक्षा ग्रहण करेंगे, और तेरे बालकों को बड़ी शान्ति मिलेगी।" परमेश्वर के लोगों की आने वाली पीढ़ियों का सौभाग्य यह है कि उन्हें परमेश्वर के बारे में सिखाया जाएगा। उनकी आत्मा उनके मन को प्रकाशित करने के लिए उनमें वास करेगी। यूहन्ना 16:13 और 14 कहता है, "तौभी जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और वही तुम्हें बताएगा।" आने वाली चीज़ें. वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरा कुछ ग्रहण करेगा, और तुम्हें दिखाएगा।" अब निश्चित रूप

से आत्मा के आने का वादा पुराने नियम में ही विभिन्न स्थानों पर पाया जाता है। लेकिन यहाँ हम पढ़ते हैं, “तेरे बच्चों को प्रभु की शिक्षा मिलेगी, तेरे बच्चों को महान शांति मिलेगी; तू धर्म में स्थिर बना रहेगा।”

यशायाह 54:14-17 परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा श्लोक 14-17 अपने लोगों के लिए परमेश्वर की सुरक्षा की बात करता है। “तू धर्म में स्थिर रहेगा, तू अन्धेर से दूर रहेगा; क्योंकि तू न डरेगा, और भय से [दूर] रहेगा; क्योंकि वह तेरे निकट न आएगा। देख, वे अवश्य इकट्ठे होंगे, परन्तु मेरी ओर से नहीं; जो कोई तेरे विरुद्ध इकट्ठे होंगे वे तेरे कारण गिरेंगे। देख, मैं ने उस लोहार को उत्पन्न किया है जो कोयले को आग में तपाता है, और अपने काम के लिये औज़ार निकालता है; और मैं ने नाश करने के लिये विनाश करनेवाला उत्पन्न किया है।

श्लोक 14-17 में विषय है: "परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा।" यदि आप उस स्थिति की तुलना करें जिसे यशायाह निर्वासन के संबंध में संबोधित कर रहा था, तो निर्वासन प्रभु द्वारा भेजा गया था ; यह उनके लोगों के लिए उनके उद्देश्य का हिस्सा था; यह उसके लोगों पर एक निर्णय था। लेकिन मुझे लगता है कि यशायाह यहां जो कह रहा है वह यह है कि भगवान के लोगों के खिलाफ शैतान द्वारा उकसाए गए हमले हार जाएंगे। परमेश्वर अपने लोगों का उद्धार करेगा। और श्लोक 16 में वह इस बात पर जोर देता है कि दुष्ट ताकतें प्रभु की अनुमति के बिना कुछ नहीं कर सकतीं। “मैं ने उस लोहार को उत्पन्न किया है जो कोयले को आग में तपाता है, और अपने काम के लिये औज़ार निकालता है; और मैं ने नाश करने के लिये विनाश करनेवाला उत्पन्न किया है। यहाँ तक कि ईश्वर के शत्रु भी उसकी रचना का हिस्सा हैं और केवल वहीं तक जा सकते हैं जहाँ तक वह अनुमति देता है; वे उसके संप्रभु नियंत्रण में हैं। इसलिये परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा।

और फिर श्लोक 17 में वह अंतिम कथन: “तुम्हारे विरुद्ध बनाया गया कोई भी हथियार सफल नहीं होगा; जो जीभ तेरे विरुद्ध न्याय के लिये उठेगी उसे तू दोषी ठहराएगा। यह उसी विचार का हिस्सा है, लेकिन फिर वह अंतिम कथन, जो पूरे अध्याय का सारांश

देता है, "यह प्रभु के सेवकों की विरासत है" - भगवान के लोगों की वृद्धि के बारे में ये वादे, इज़राइल के लिए आशीर्वाद, भगवान के लोगों की स्थिरता और सुरक्षा। "यह प्रभु के सेवकों की विरासत है," जो लोग प्रभु के सच्चे सेवक का अनुसरण करते हैं। परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा। ठीक है नौ में से पांच बज गए, चलो दस मिनट का ब्रेक लेते हैं।

मैडी विल्सन द्वारा लिखित
कार्ली गीमन द्वारा रफ संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स
द्वारा अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनर्वाचित